Roll No. ....

Total No. of Questions : 3] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) IVth Semester Examination

9031

SANSKRIT

(निबंध तथा अनुवाद)

(Core)

Paper : MSKT-403

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100

नोट :- नियमित तथा पत्राचार के छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र **80** अंक का है, तथा प्राइवेट छात्रों के लिए **100** अंक निर्धारित हैं।

1. अधोलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर संस्कृत में निबंध लिखिए–

(क) तीर्थराजः अयोध्याधाम

(ख) सत्संगतिः किं न करोति पुंसाम् ?

(ग) विद्यामहिमा

(घ) वेदानां महत्त्वम्

(ङ) संस्कृतिः संस्कृताश्रिता

(च) उद्योगमहत्त्वम्

(छ) माघे सन्ति त्रयो गुणाः

(ज) कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते 15×2=30[20×2=40]

2. किन्हीं **दस** वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) गाय का दूध मीठा होता है।

(ख) स्वच्छ जल के लिए तू नदी पर जा।

(ग) शिव ने अर्जुन को अस्त्र दिया।

(घ) देवदत्त ने बाग में पके हुए फल खाये।

(ङ) राम ने धनुष से रावण को मारा।

(च) देवदत्त जटाओं से संन्यासी प्रतीत होता है।

(छ) स्त्रियों को आभूषण अच्छे लगते हैं।

(ज) गङ्गा हिमालय से निकलकर बहती हुई समुद्र में जाकर मिलती है।

(झ) कुम्हार मिट्टी से सुन्दर घड़े बनाकर जमीन पर रखता है।

(ञ) शिष्ट गुरु से विद्या ग्रहण करता है।

(ट) बीजों से अंकुरण हुआ और वृक्षों का रूप धारण किया।

(ठ) इस बगीचे में माली पौधे खींचकर कटिंग करता है।

(ड) शीतकाल में वस्त्र तथा ग्रीष्मकाल में अन्न दान करो।

(ढ) मोहन प्रतिदिन नहाकर तौलिये से शरीर पोंछता है।

(ण) भक्त ने शिव को फल उपहार में दिए।

3×10=30[4×10=40]

3. अधोलिखित गद्य का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

स्वावलम्बन एक अलौकिक गुण है, जो मनुष्य के जीवन को सदा सुखमय बनाता है। स्वावलम्बन शिक्षा देता है कि मनुष्य को अपना काम स्वयं करना चाहिए। अपने काम के लिए दूसरों के आश्रित नहीं रहना चाहिए। जो मनुष्य जितना स्वावलम्बी होता है, वह उतना ही सुखी रहता है। जो परावलम्बी होता है, वह सदा दुःखी रहता है। स्वावलम्बन से मनुष्य में पुरुषार्थ, साहस, धैर्य, कर्त्तव्यशीलता और प्रसन्नचित्तत्व आदि गुणों का उदय होता है। परावलम्बन से हीनता, दीनता, खिन्नता, अधीरता आदि दोषों का उदय होता है। उन्नति का साधन स्वावलम्बन है। अतः जो मनुष्य या देश उन्नति करना चाहता है, उसे स्वावलम्बी होना चाहिए। 20[20]

7. अधोलिखित में से किसी **एक** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

(क) श्रिय: पति: श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवास: वसुदेवसद्मनि।
वसन्ददर्शावतरन्तमम्बराद्धिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरि:।

अथवा

(ख) हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यत: शुभस्य पूर्वाचरितै: कृतं शुभै:।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥

[8]

8. (क) चम्पू काव्य परम्परा में चम्पूभारतम् का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

(ख) चम्पूभारतम् के अनुसार सुभद्रा का चरित्र-चित्रण कीजिए।[8]

9. निम्नलिखित में से किसी **एक** पद्य की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) भूभुजोऽस्य सविधे विचरन्त्योर्भोजभद्रस्तुतयोर्दृशिशोभाम्।
जेतुकाममिव सर्वसमष्ट्या प्रादुरास पुरतो मृगयूथम्॥

अथवा

(ख) तत: कृपामन्दमना: किंदमनामधेय: संदारिततनुस्यन्दमानरुधिरेण महारुषा कल्परविकल्पमहा रुषा तस्मिन् महीभृति संभोगसंभेदकमम्भोजदृशां दम्भोलिमिव सहस्राक्ष: शापमुदस्रक्षीत्।

[8]

Total No. of Questions : **9**] [Total No. of Printed Pages : **4**

(2064)

M.A. (CBCS) IVth Semester Examination

9032

SANSKRIT

(गद्य, पद्य तथा चम्पू काव्य)

(DSE-I)

Paper : MSKT-404 (III)

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : {Regular : 80, Private : 100}**

नोट :- निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

खण्ड–अ

1. सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत–

(i) सुबन्धो: काल: क: ?

(ii) वासवदत्तायां कन्दर्पकेतु: क: आसीत ?

(iii) दशकुमारचरितस्य सप्तमोच्छ्वासे कस्य चरितं वर्णितम् ?

(iv) दण्डिन: काल: क: ?

(v) शिशुपालवधस्य रचयिता कस्मिन् शतके आसीत् ?

(vi) शिशुपालवधमहाकाव्ये महर्षेः नारदस्य साम्यं केन पर्वतेन सह वर्णितम् ?

(vii) 'चम्पूभारतम्' काव्ये यतिवेषधारी कः ?

(viii) अनन्तभट्टस्य मूलं वासस्थानं कुत्र ? [2×8=16]

खण्ड—ब

2. (क) सुबन्धु के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

(ख) गद्यकाव्य के रूप में 'वासवदत्ता' की समीक्षा कीजिए। [8]

3. स्वेच्छया **एक** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) अहो भुवनातिशायि सौन्दर्यम्। अहो शृङ्गारकलाकौशलम्। तथा ह्ययं तत्काललीलाबहलविरलविमल-मालवीदशन-कान्ति दन्तिदन्तघटितो मण्डपोऽसावपि कनकशलाका-विनिर्मितयन्त्र-पञ्जरसंयतः क्रीडाशुकः इत्यादि परिचिन्तयन्, प्रविश्य, व्याकरणेनेव सरक्तपादेन महाभारतेणेव सुपर्वणा रामायणेनेव सुन्दरकाण्डचारुणा जङ्घायुगलेन विराजमानाम् ..... ।

अथवा

(ख) सुनृपमिव सज्जनक्रमकरम् कृतमन्युमिव करतोयाप्लुतमुखम्, विरहिणमिव चन्दनोदकसिक्रम्, विलासिनमिव नर्मदानुगतम्, राशिमिव समीनकुलीरम्, शृङ्गारिणमिव अनेकामुक्तालङ्कृतम्, उद्धृतकालकूटमपि प्रकटतविषराशिम्, अतिवृद्धमपि सुन्दरीपरिवृतकण्ठम्, सुरोत्पत्तिस्थानमपि असुराधिष्ठितम्, जलनिधिमपश्यत्। [8]

खण्ड—स

4. (क) दण्डी के गद्यकाव्य की रचनाशैली वर्णन कीजिए।

अथवा

(ख) दशकुमारचरित के सप्तम उच्छ्वास के आधार पर मन्त्रगुप्त का चरित्र चित्रण कीजिए। [8]

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** को सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—

(क) दन्तच्छदकिसलयलङ्घिनाहर्षास्रसलिलधाराशीकरकण-जालक्लेदितस्य स्तनतटचन्दनस्यार्द्रतां निरस्यतास्यान्तरालनिःसृतेन तनीयसानिलेन हृदयलक्ष्यदलन-दक्षिणारतिसहचर-शरस्यदायितेन तरङ्गितदशन-चन्द्रिकाणि कानिचिदेतान्यक्षराणि कलकण्ठी-कलान्यसृजत्।

अथवा

(ख) एवं गते मन्त्रिणि, राजनि च कामवृत्ते, चन्द्रपालितो नामाश्मकेन्द्रामात्यस्येन्द्रपालितस्य सूनुः, असद्वृत्तः पितृनिर्वासितो नाम भूत्वा, बहुभिश्चारणगणैर्बह्वीभि-खल्पकौशलाभिः शिल्पकारिणीभिरनेकच्छन्नकिंकरैश्च गूढपुरुषैः परिवृतोऽभ्येत्य विविधाभिः क्रीडाभिविहारभद्रमात्मसादकरोत्। [8]

खण्ड—द

6. (क) शिशुपालवध के अनुसार महर्षि नारद के अवतरण का वर्णन कीजिए।

अथवा

(ख) माघ की काव्यशैली की समीक्षा कीजिए। [8]

4. (क) अधोलिखितयो: कस्यचिदे**कस्य** सप्रसङ्गं व्याख्या कार्या–

(i) इयेष सा कर्तुमवन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मन:।
अवाप्यते वा कथमन्यथाद्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृश:॥

(ii) तमातिथेयी बहुमानपूर्वया सपर्यया प्रत्युदियाय पार्वती।
भवन्ति साम्येऽपि निविष्टचेतसां वपुर्विशेषेष्वति गौरवा: क्रिया:॥ [8]

(ख) कुमारसम्भवस्य पञ्चमसर्गमनुसृत्य शिवपार्वत्यो: संवाद: समुपस्थापनीय:।

अथवा

कुमारसम्भवस्य पञ्चमसर्गमवलम्ब्य महाकविकालिदासस्य अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य सौन्दर्यं निरूपयत। [8]

5. (क) अधोलिखितयो: कस्यचिदेकस्य सप्रसङ्गं व्याख्या विधेया–

(i) यस्मिन्ननवरतधर्मकर्मोपदेशशान्तसमस्तव्याधि-व्यतिकश: पुरुषायुषजीविन्य: सकलसंसारसुखभाज: प्रजा:। तथाहि कुष्ठयोगो गान्धिकापणेषु, स्फोटप्रवादो वैयाकरणेषु, संनिपातस्तालेषु, ग्रहसंक्रान्तिर्ज्योति: शास्त्रेषु, भूतविकारवाद: सांख्येषु, क्षयस्तिथिषु, गुल्मवृद्धिर्वनभूमिषु, गलग्रहो मत्स्येषु, गण्डकोत्थानं पर्वतवनभूमिषु, शूलसम्बन्धश्चण्डिकायतनेषु दृश्यसे न प्रजासु।

(ii) यस्यां च दिव्यदेवकुलालंकृता: स्वर्गा इव मार्गा: सततमपांसुवसना: सागरा इव नागरा: समन्तवारणानि वनानीव भवनानि, सुरसेनान्विता: स्वर्गभूपा इव कूपा:, अधिकन्धरोद्देशमुद्भासयन्तो हारा इव विहारा:। अक्षरसावधाना: कविगोष्ठीषु कवयो विलोक्यन्ते द्यूतस्थानेषु द्यूतकारा:। [8]

(ख) महाकवित्रिविक्रमभट्टस्य काव्यसौन्दर्यं निरूपयत।

अथवा

नलचम्पूकाव्यस्य पठितांशमवलम्ब्य राज्ञ: नलस्य वर्णनं कुरुत। [8]

Roll No. ....

Total No. of Questions : **5**] [Total No. of Printed Pages : **4**

(2064)

M.A. (CBCS) IVth Semester Examination

9033

SANSKRIT

(गद्य, पद्य तथा चम्पू काव्य)

(DSE-II)

Paper : MSKT–404 (IV)

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100**

नोट :- निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

1. अधोलिखिता: सर्वेऽपि प्रश्ना: एकैकेन वाक्येन संस्कृतभाषया समाधेया:–

(क) 'सुखं च राज्यं च वंशश्च प्राणाश्च परलोकश्च त्वयि मे स्थिता:, कस्येयमुक्ति ?

(ख) क्षयेण क्षोणीकृत: ग्लान्या गोचरीकृत: दु:खासिकया दष्ट: क आसीत् ?

(ग) आगमदीपदृष्टेन खल्वध्वना सुखेन वर्तते लोकयात्रा; पङ्क्तिरियं कस्य ग्रन्थस्य वर्तते ?

(घ) दिव्यं हि चक्षुर्भूत भवद् भविष्यत्सु व्यवहित-विप्रकृष्टादिषु च विषयेषु शास्त्रं नामाप्रतिहतवृत्ति: पङ्क्तिरियं कस्य ग्रन्थस्य वर्तते ?

(ङ) यत: सतां सन्नतगात्रि सङ्गतं मनीषिभि: साप्तपदीनमुच्यते: कस्येयमुक्ति: ?

(च) 'न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्' सूक्तिरियं कस्य ग्रन्थस्य वर्तते ?

(छ) प्रसन्ना: कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणा: वाच: स्त्रियश्च कस्मात् कारणात् भवन्ति ?

(ज) उदात्तनायकोपेता गुणवद्वृत्तमुक्तका का ? [2×8=16]

2. (क) अधोलिखितयो: कस्यचिदेकस्य सप्रसङ्गं व्याख्या कार्या–

(i) विरलं वाचि चलितं चेतसि विह्वलं वपुषि क्षीणमायुषि प्रचुरं प्रलापे सततं श्वसिते जितं जृम्भकाभि: पराधीनमाधिभि: अनुबद्धमनुबन्धिकाभि: पार्श्वोपविष्टया चानवरतरोदनोच्छूननयनया गृहीतचाभरिकयापि नि:श्वसितैरेव वीजयन्त्या विविधौषधि धूलधूसरितशरीरया देव्या यशोमत्या शिरसि वक्षसि च स्पृश्यमानं पितरमद्राक्षीत्।

(ii) वत्स ! जानामि त्वां पितृप्रियमतिमृदुहृदयम्। ईदृशेषु विधुरयति धीमतोऽपि हृदयम्। अतिदुर्धरो बान्धवस्नेह: सर्वप्रमाथी। यतो नार्हस्यात्मानं शुचे दातुम्। उद्दाममहादाह-ज्वरदग्धोऽपि दह्ये खल्वहमधिकतरमनेनायुष्मदाधिना। निशितमिव शल्यं तक्ष्णोति मां त्वदीयस्तनिमा। त्वद्विधानां पीडा: पीडयन्ति सकलमेव भुवनतलम्। न हि अल्पपुण्यभाजां वंशमलङ्कुर्वन्ति भवादृशा:। [8]

(ख) हर्षचरितस्य पञ्चमोच्छ्वासवर्णनमवलम्ब्य महाकविबाणभट्टस्य काव्यसौन्दर्यं प्रसाधयत।

अथवा

हर्षचरितस्य पञ्चमोच्छ्वास वर्णनमाश्रित्य राज्ये व्यापृतां शोकाकुलां स्थितिं वर्णयत। [8]

3. (क) अधोलिखितयो: कस्यचिदेकस्य सप्रसङ्गं व्याख्या कार्या–

(i) येऽप्युपदिशन्ति एवमिन्द्रियाणि जेतव्यानि एवमरिषड्वर्गस्त्याज्य:, सामादिरूपायवर्ग: स्वेषु परेषु चाजस्रं प्रयोज्य:, सन्धिविग्रहचिन्तयैव नेय: काल: स्वल्पोऽपि सुखस्यावकाशो न देय: इति, तैरप्येभिर्मन्त्रिबकैर्युष्मत्तश्चौर्यार्जितं धनं दासीगृहेष्वेव भुज्यते। के चैते वराका:। येऽपि मन्त्रकर्कशास्तन्त्रकर्तार: शुक्राङ्गिरसविशालाक्षबाहुदन्तिपुत्रपराशरप्रभृतयस्तै: किमरिषड्वर्गोजित: कृतं वा तै: शास्त्रानुष्ठानम्।

(ii) ननु चतस्रो राजविद्यास्त्रयी वार्तान्वीक्षिकी दण्डनीतिरिति तासु तिस्रस्त्रयीवार्तान्वीक्षिक्यो महत्यो मन्दफलाश्च तास्तावदासताम्। अधीष्व तावद् दण्डनीतिम्। स तथा इत्यधीते। शृणोति च। तत्रैव जरां गच्छति। तत् तु शास्त्रं शास्त्रान्तरानुबन्धि। सर्वमेव वाङ्मयमविदित्वा न तत्त्वतोऽधिगंस्यते। भवतु कालेन बहुनाल्पेन वा तदर्थाधिगति:। अधिगतशास्त्रेण चादावेव पुत्रदारमपि न विश्वास्यम्। [8]

(ख) विहारभद्रेण राज्ञे अनन्तवर्मणे कीदृश: परामर्श: प्रोक्त: इत्यस्य वर्णनं क्रियताम्।

अथवा

दशकुमारचरितस्य अष्टमोच्छ्वासमवलम्ब्य महाकविदण्डिन: पदलालित्यं निरूप्यताम्। [8]

(v) जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।

स हेतु सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥

(vi) अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।

भोजने चाऽमृतं वारि भोजनान्ते विषप्रदम्॥ 4×4=16[5×4=20]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

M.A. (CBCS) IVth Semester Examination

9034

SANSKRIT

(नीति साहित्य)

(GE–II)

Paper : MSKTG–405 (IV)

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100

नोट :- सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(i) चाणक्य का अन्य नाम बताइए।

(ii) चाणक्य नीति के मंगलाचरण में किसकी स्तुति की गई है ?

(iii) किस देश में निवास नहीं करना चाहिए ?

(iv) किस आयु का हो जाने पर पुत्र के साथ मित्रवत् आचरण करना चाहिए ?

(v) ग्राम के लिए किसका त्याग करना चाहिए ?

(vi) गुण किसकी शोभा बढ़ाते हैं ?

(vii) विचक्षण जन किस काल के अनुसार व्यवहार करते हैं ?

(viii) पृथ्वी पर जल और अन्न के अतिरिक्त तृतीय रत्न कौनसा है ?

2×8=16[2½×8=20]

2. चाणक्य का परिचय लिखिए।

अथवा

लोक व्यवहार के लिए चाणक्य नीति की उपयोगिता का वर्णन कीजिए। 16[20]

3. किन्हीं **चार** श्लोकों की व्याख्या कीजिए–

(i) दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायक:।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न: संशय:॥

(ii) धनिक: श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पञ्चम:।
पञ्च यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत॥

(iii) कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्॥

(iv) विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च॥

(v) श्रुत्वा धर्मं विजानाति श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम्।
श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात्॥

(vi) सन्तोषस्त्रिषु कर्तव्य: स्वदारे भोजन धने।
त्रिषु चैव न कर्तव्योऽध्ययने जपदानयो:॥ 4×4=16[5×4=20]

4. चाणक्य नीति के अष्टम **अथवा** दशम अध्याय का प्रतिपाद्य विषय संक्षेप में लिखिए। 16[20]

5. स्वेच्छया किन्हीं **चार** श्लोकों की व्याख्या कीजिए–

(i) रूपयौवनसंपन्ना विशालकुलसम्भवा:।
विद्याहीना नशोभन्ते निर्गन्धा इवकिंशुका:॥

(ii) परस्परस्य मर्माणि ये भाषन्ते नराधमा:।
त एव विलयं यान्ति वल्मीकोदरसर्पवत्॥

(iii) येषां न विद्या न तपो न दानं
न चापि शीलं न गुणो न धर्म:
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

(iv) लौकिके कर्मणि रत: पशूनां परिपालक:।
वाणिज्यकृषिकर्ता य: स विप्रो वैश्य उच्यते॥

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 2

(2064)

M.A. (CBCS) IVth Semester Examination

9029

SANSKRIT

(संस्कृत साहित्य का इतिहास)

(Core)

Paper : MSKT-401

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100

नोट :- नियमित तथा पत्राचार के छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र **80** अंक का है, तो प्राइवेट छात्रों के लिए **100** अंक निर्धारित हैं।

1. संस्कृतगिरा सर्वेषां प्रश्नानामुत्तरमपेक्ष्यते–

(क) वाल्मीकिरामायणे प्रधान पात्राणां नामानि लिखत।

(ख) महर्षेः कालो वर्ण्यताम्।

(ग) महाभारत रचनाकारः कोऽस्ति ?

(घ) महाभारते पर्वसंख्या: कति ?

(ङ) अश्वघोषस्य प्रधानमहाकाव्यनाम किमस्ति ?

(च) अश्वघोषकालिदासयो: क: प्राचीनतर: ?

(छ) कालिदास-रचनानामानि लिखत।

(ज) अभिज्ञानशाकुंतले प्रधानपात्रनाम लिखत।

2×8=16[2½×8=20]

2. (क) अश्वघोष की रचनाओं का परिचय दीजिए।

अथवा

(ख) वाल्मीकिरामायण का वैशिष्ट्य प्रस्तुत कीजिए। 16[20]

3. भारवि के काव्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

अथवा

श्रीहर्ष का संस्कृतसाहित्य को योगदान पर प्रकाश डालिए। 16[20]

4. भास का विस्तृत परिचय दीजिए।

अथवा

विशाखदत्त की कृतियों पर प्रकाश डालिए। 16[20]

5. जयदेव का गीतिसाहित्य को योगदान पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कवि अमरुक का पूर्ण परिचय प्रस्तुत कीजिए। 16[20]

Roll No. ....

...al No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 7

...064)

M.A. (CBCS) IVth Semester Examination

9030

SANSKRIT

(नाटक तथा नाट्यशास्त्र)

(Core)

Paper : MSKT-402

...Time : 3 Hours] [Maximum Marks : { Regular : 80, Private : 100 }

नोट :- सभी प्रश्न करना अनिवार्य है।

1. (क) अधोलिखितानां षड् (6) प्रश्नानां उत्तरं संस्कृतभाषायां लिखत–

(i) मृच्छकटिकम् इत्यस्य शब्दस्य हिन्दां अर्था भवति ?

(ii) प्रकरणस्य उदाहरणम् अस्ति।

(iii) वसन्तसेना कस्य नाटकस्य नायिका अस्ति ?

(iv) 'मृच्छकटिकम्' नाटकस्य नायक कः ?

(v) शूद्रकस्य रचना अस्ति।

(vi) आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम् एषा उक्तिः कुत्र विद्यते ?

(vii) मृच्छकटिकमस्ति–

(क) नाटकम्

(ख) प्रकरणम्

(ग) भाणः

(घ) व्यायोगः

(viii) मृच्छकटिके प्रथमाङ्कस्य नाम अस्ति–

(क) द्यूतकरसंवाहकः

(ख) संधिच्छेदः

(ग) अलङ्कारन्यासः

(घ) मदनिकाशर्विलकः

(ix) चारुदत्तस्य पत्नी मदनिका अस्ति-सत्यम्/मिथ्या

[2×6=12]

(ख) अधोलिखितानां चतुर्णां (4) प्रश्नानां उत्तरं संस्कृतभाषायां लिखत–

(i) साहित्यदर्पणस्य षष्ठपरिच्छेदे कस्य वर्णनं विद्यते–

(क) दृश्यश्रव्यकाव्यस्य भेदाः

(ख) काव्यस्य प्रयोजनम्

(ग) रसस्वरूपम्

(घ) वाक्यस्वरूपम्

(ii) विश्वनाथस्य रचना अस्ति–

(क) साहित्यदर्पणः

(ख) काव्यप्रकाशः

(ग) ध्वन्यालोकः

(घ) एषु नैकापि

(iii) रूपकाणि भवन्ति–

(क) नव

(ख) दश

(ग) सप्त

(घ) चत्वारि

(iv) नाटकस्य वृत्तं भवति–

(क) ख्यातम्

(ख) कविकल्पितम्

(ग) उभयम्

(घ) न किमपि

(v) अभिनेयं काव्यं भवति–

(क) श्रव्यम्

(ख) दृश्यम्

(ग) उभयम्

(घ) न किमपि [2×4=8]

2. इस प्रश्न में से प्रत्येक खण्ड से एक प्रश्न करना अनिवार्य है :

(क) (i) मृच्छकटिक में चित्रित सामाजिकी स्थिति की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

अथवा

(ii) वसन्तसेना के चरित्र का निरूपण कीजिए।

(ख) (i) काव्य भेदों की साहित्यदर्पण की दृष्टि से व्याख्या कीजिए।

अथवा

(ii) रूपक के भेदों की साहित्यदर्पण की दृष्टि से व्याख्या कीजिए। [2×10=20]

3. इस प्रश्न में छः पद्यों में से **चार** पद्यों की व्याख्या करना अनिवार्य है :

(क) लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥

इस पद्य की ससन्दर्भ सप्रसङ्ग विस्तृत व्याख्या कीजिए।

(ख) यथैव पुष्पं प्रथमे विकासे समेत्य पातुं मधुपाः पतन्ति।
एवं मनुष्यस्य विपत्तिकाले छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति॥

इस पद्य की ससन्दर्भ एवं सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए।

(ग) क्षीरिण्यः सन्तु गावो, भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या,
पर्जन्यः कालवर्षी, सकलजनमनोनन्दिनो वान्तु वाताः।
मोदन्तां जन्मभाजः, सततमभिमता ब्राह्मणाः सन्तु सन्तः,
श्रीमन्तः, पान्तु पृथ्वीं प्रशमितरिपवो धर्मनिष्ठाश्च भूपाः॥

इस पद्य की ससन्दर्भ सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए।

(घ) यः स्तब्धं दिवसान्तमानतशिरा नास्ते समुल्लम्बितो

यस्योद्धर्षणलोष्ठकैरपि सदा पृष्ठे न जातः किणः।

यस्यैतच्च न कुक्कुरैरहरहर्जङ्घान्तरं चर्व्यते तस्यात्यायतकोमलस्य

सततं द्यूतप्रसङ्गेन किम्॥

इस पद्य की ससन्दर्भ सप्रसङ्ग विस्तृत व्याख्या कीजिए।

(ङ) न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति।

यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयो न वेशजाताः शुच्यस्तथाऽङ्गना॥

इस पद्य की ससन्दर्भ सप्रसङ्ग विस्तृत व्याख्या कीजिए।

(च) सत्यं न मे विभावनाशकृताऽस्ति चिन्ता, भाग्यक्रमेण हि

धनानि भवन्ति यान्ति।

एतत्तु मां दहति, नष्टधनाश्रयस्य यत् सौहृदादपि जनाः

शिथिलीभवन्ति॥

इस पद्य की ससन्दर्भ सप्रसङ्ग विस्तृत व्याख्या कीजिए।

[4×5=20]

4. निम्नलिखित **चार** सूक्तियों में से **दो** सूक्तियों की व्याख्या कीजिए।

(क) अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।

(ख) अहो निर्धनता सर्वापदास्पदम्।

(ग) चारित्र्येण विहीन आढ्योपि च दुर्गतो भवति।

(घ) दुष्करं विषमौषधीकर्तुम्। [2×5=10]

5. (क) निम्नलिखित दो प्रश्नों में से **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए :

(i) भारतीवृत्ति के अंगों को लिखकर आमुख की विवेचना कीजिए।

अथवा

(ii) रूपक के भेदों को लिखकर गर्भाङ्क के लक्षण को प्रतिपादित कीजिए। [1×10=10]

(ख) निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए :

(i) कैशिकी वृत्ति से क्या अभिप्राय है ? उसके अङ्ग कौन से हैं ? सोदाहरण निरूपित कीजिए।

अथवा

(ii) शर्विलक के चरित्र को निरूपित कीजिए।

अथवा

(iii) मुद्राराक्षस के प्रधान रस पर टिप्पणी कीजिए।

[1×20=20]